Research Paper | Social Science | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 3 | Issue : 5 | May 2017

SASHKAT MAHILA : SASHKAT RASTRA KA AADHAR

सशक्त महिला : सशक्त राष्ट्र का आधार

Sudesh [1] | Dr. Satyawan Dalal [2]

[1] Deptt. Of Public Admn, Ch. Devi Lal University, Sirsa (Haryana).

[2] Asssistant Proff. Deptt. Of Public Admn, Ch. Devi Lal University, Sirsa (Haryana).

ABSTRACT

जब भी हम किसी राष्ट्र की समृद्धि और विकास की बात करते हैं तो उससे हमारा तात्पर्य है उसका चहुंमुखी विकास तथा उससे सम्बंधित प्रत्येक क्षेत्र का विकास। चूंकि नारी भी देश की समृद्धि और विकास से आवश्यक रूप से सम्बंधित है नारी का विकास किए बिना राष्ट्र के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नारी न केवल आधी आबादी का नेतृत्व करती हैं अपितु भविश्य की पीढ़ी के निर्माण में अहम भूमिका का निर्वाहन करती हैं। इस आधी आबादी की अवहेलना करके विकास की पराकाश्ठा को प्राप्त करना कदापि संभव नहीं है।

foLrkj

महिलाएं हमारे देश की जनसंख्या का लगभग आधा भाग हैं तथा विकास कार्यो में उनकी भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है। आर्थिक तथा सामाजिक विकास की योजनाएं बिना महिलाओं के योगदान के सम्पूर्ण नहीं हो सकती। वर्तमान समाज में सामाजिक असमानताएं होने पर भी उनके सामाजिक स्तर में काफी सुधार हुआ है जिससे आज कई महिलाएं उच्च पदों पर आसीन हैं। समाज और राज्य को दिशा देने में स्त्रियों की भरपूर सराहनीय भूमिका रही है। मगर हमारे पुरूश प्रधान समाज में महिलाओं को अन्याय एवं शोशण का शिकार होना पड़ता है। वैदिक काल में तो नारी को सम्मानिय दर्जा प्राप्त था जिसका आभास वैदिक श्लोक 'यत्र नार्यस्तु पुजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' से हो जाता है।नारी के गौरवपूर्ण अतीत को निहारने पर सर्वत्र एक मूर्तिमान देवत्व उभरा दिखता है। वस्तुतः नारी प्राचीन भारत की आद्यशक्ति का प्रतीक है, साक्षात लक्ष्मी है, साकार सरस्वती है और प्रत्यक्ष दुर्गा है उसके समक्ष दैव्य, अविघा तथा विनाश कहीं भी टिक नहीं सकता।नारी में पृथ्वी जैसी सहनशीलता, आकाश के जैसा बड़ा हृदय और किसी लदे हुए फलों के वृक्ष की तरह विनम्रता है जो खुद तपती गर्मी में धूप में खड़े रहते हैं ताकि वो अपनों को शीतल छाया दे सकें, अपनी ममता, अपने प्यार से अपनों को जिंदगी के थपेडों से बचा सकें। वो फलों से अपनों का पेट भर सकें, मगर इन सबके बावजूद लोगों की पत्थर मारकर फल खाने की पुरानी रीति रही है चाहे वो कितना ही झुक लें। भारत में स्त्रियों की स्थिति का विषय अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इस संसार में यदि नारी न होती तो सभ्यता और सस्कृति भी न होती। किसी समाज के सास्कृतिक विकास का मानदण्ड नारी की मर्यादा है। नारी धरा पर स्वर्गीय ज्योति की साकार प्रतिमा हैं। नारी सन्तप्त हृदय के लिए शीतल छाया है, स्नेह और सौजन्य की साकार देवी है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नारी ही निर्माता शक्ति है। नारी विधाता की अनुपम एवं सर्वोत्कृष्ट रचना मानी जाती है। इसमें कल्याण, ममता, स्नेह आदि गुण स्वाभाविक रूप में ही विद्यमान रहते हैं। नर तथा नारी जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। प्रत्येक मनुष्य की सफलता के पीछे किसी न किसी नारी का हाथ अवश्य होता है इसमें कोई संदेह नहीं हैं। तुलसी को तुलसीदास बनाने का श्रेय उनकी पत्नी रत्नावली को है। भारत का अतीत इस प्रकार के असंख्य उदाहरणों से भरा पड़ा है। भारत में सैद्धान्तिक रूप से हमेशा से ही नारी की मर्यादा रही है अर्थात् उसका आदर एवं सम्मान रहा है। कहा जाता है कि समाज में नारी का स्थान वही है जो पुरूष का है न कम और न ज्यादा। हिन्दू आदर्श के अनुसार, स्त्रियां अर्धागिनी कही गई हैं। हिन्दू समाज में सर्वनियता भगवान की शक्तियों का लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, काली आदि नारी रूपों में भी वर्णन किया गया। इस प्रकार नारी शक्ति धन और ज्ञान का प्रतीक मानी गई है। भारत माता हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है इसलिए हम भारत माता को महान कहकर नारी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। यह सब कुछ होते हुए भी व्यवहारिक रूप से विभिन्न कालों में स्त्रियों की स्थिति में उतार चढ़ाव आते रहे लेकिन वर्तमान में विश्व भर में महिलाओं के समुचित विकास एवं सशक्तिकरण के लिए अनुकूल वातावरण बनने लगा है। इसी आधार पर 21वीं सदी को "महिलाओं की सदी" की संज्ञा से विभूशित करने लगे हैं। अब महिलाएं हर क्षेत्र में पुरूशों के साथ बराबरी कर अपनी अन्तर्निहित क्षमता के बल पर आत्मविश्वास और साहस के साथ पुरूश प्रधान समाज में अपने वर्चस्व का अहसास कराने का सफल प्रयास कर रहीं हैं। इसके साथ ही महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए वर्तमान में हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी सहभागिता तथा अन्य क्षेत्रों में भी उनकी भागीदारी बढ़ानें के लिए किए गए प्रयासों को किसी भी परिस्थिति में संतोशजनक नहीं कहा जा सकता।विकास के हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना इसलिए जरूरी है क्योंकि किसी भी देश की आर्थिक–सामाजिक सरंचना में जब विकास के बीज डाले जाते हैं। प्रगति की सिंचाई की जाती है। बुद्धि की खाद पड़ती है तो संरचना में नई फसलें नई सोच के साथ उगती हैं, देश के आर्थिक–सामाजिक विकास और प्रगति को लोकतंत्रीय राजनीतिक मॉडल में निर्मित किया गया है। यह गहराई से महसूस किया जा रहा है कि देश की आधी आबादी का यदि समुचित विकास नहीं हुआ तो प्रगति नहीं हो सकती। स्त्री–पुरूश की विकास कार्यों में सहभागिता ही देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करती है। इस दृश्टि से स्त्री और पुरूश के मध्य शक्ति का संतुलन होना अत्यंत आवश्यक है।अब एक साधारण सा सवाल यह उठता है कि किसी भी महिला के लिए विकास अधिक महत्वपूर्ण है या सशक्तिकरण ज्यादा जरूरी है। जवाब है, कि दोनो ही जरूरी हैं और दोनो ही एक दूसरे के पूरक हैं। सशक्तिकरण के बिना महिला विकास की बात तक करना भी फिजूल होगा। भारत ही नहीं समूची दुनिया में महिला सशक्तिकरण का दौर चल रहा है। आखिर सशक्तिकरण है क्या वो भी महिलाओं के परिपेक्ष्य में ? महिला सशक्तिकरण अर्थात महिलाओं को सशक्त बनाना। सशक्त बनाने से तात्पर्य यह है कि उनको समाज में इस तरह का अधिकार व सम्मान प्राप्त हो सके जिससे समाज में उनके अस्तित्व की पहचान एक अबला के रूप में न होकर सबला के रूप में हो सके इसी दिशा में कदम आगे बढाते हुए भारत सरकार द्वारा वर्श 2001 को "महिला सशक्तिकरण वर्श" के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। इससे इस वर्श विशेश में देश में महिलाओं को सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक रूप में अधिक सशक्त बनाने, उनके लिए चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं तथा कार्यक्रमों को नई गति प्रदान करने, उनके प्रति बढ रहे दुर्व्यवहार और हिंसा की घटनाओं में कमी लाने, महिला अधिकारों और नारी शक्ति के संबंध में उनमें जागरूकता और चेतना विकसित करने जैसे महत्वपूर्ण अनेक प्रयास किए जाने की घोशणाएं की गईं। "महिला सशक्तिकरण वर्श" में केन्द्र सरकार द्वारा देश में पहली बार राश्ट्रीय महिला उत्थान नीति बनाई गई ताकि देश में महिलाओं का विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान, समुचित विकास और समानता के लिए आधारभूत व्यवस्थाएं निर्धारित किया जाना संभव हो सके। 31 जनवरी 1992 को राश्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की गई और इसी वर्श से ही देश में अन्तर्राश्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाने लगा।

महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अनेकों कदम उठाए गए है जिनमें से कुछ प्रयासों के सार्थक परिणाम दिखाई देने लगे हैं। समय के साथ महिलाओं ने भी स्वंय को काफी बदला है और आज महिलाएं करियर के हर क्षेत्र में पहचान को लेकर काफी जागरूक हो चुकी है। अपने ही नाम से जानी जाए इसके लिए वे काफी मेहनत भी कर रही है। कई महिलाओं ने अपने आत्मविश्वास के बल पर अन्धकार के कपटों को परे धकलते हुए प्रकाशमय पथ की तरफ अपने कदम बढाते हुए सफलता का परचम लहराने में खूब कामयाबी हासिल की है तथा औरों के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत बन कर उन्हें आगे आने के लिए प्रेरित कर रही हैं। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण रूपी औजार द्वारा महिलाएं सशक्त होकर एक सशक्त राश्ट्र का आधार बनती जा रही हैं। इन सशक्त महिलाओं के अनेकों उदाहरण हमारे सामने है। जो अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। ये महिलाएं हैं। नैना लाल किदवई, जिन्हे सन् 2000 और 2001 में एशिया की सर्वाधिक चर्चित महिलाओं में सूचीबद्ध किया गया था। 2003 में, इन्हें अन्तर्राश्ट्रीय व्यापार में दखल रखने वाली शीर्श पचास महिलाओं में गिना गया। 26 जनवरी 2007 को उन्हें राश्ट्रपति द्वारा पदमश्री से भी सम्मानित किया गया। लीना नैयर, जिन्हे हिन्दुस्तान यूनीलीवर कंपनी की सबसे छोटी उम्र की कार्यकारी निदेशक बनने का गौरव प्राप्त हुआ। शांताबाई की उपलब्धियों के कारण राश्ट्रीय साक्षरता मिशन द्वारा उन पर 30 मिनट का एक वृतचित्र बनाया गया जिसे 'टिमटिमाते दीप' का नाम दिया गया। माधवी पुरी बुच ICICI बैंक में प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में इन्होंने अपनी प्रतिभा से इस बैंक को जिस तरह निखारा यह सभी जानते हैं। अमृता पटेल ने नेशनल डेयरी डिवैल्पमैंट बोर्ड की चेयरमैन के रूप में सराहनीय कार्य किया। यह बोर्ड विश्व का बहुत बड़ा प्रोग्राम है। यशोदा देवी भी कई

अन्तर्राश्ट्रीय और राश्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित की गईं क्योंकि उन्होनें मधुबनी पेंटिंग को क्षेत्र विशेश से बाहर निकालकर सार्वभौमिक बना दिया। ऐसे ही खेल जगत में भी महिलाओं ने राश्ट्रीय तथा अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर अपना सराहनीय प्रदर्शन करते हुए सशक्त होने का परिचय दिया। साक्षी मलिक, पी0 वी0 संधू, दीपा मलिक, सायना नेहवाल, कृश्णा पुनिया और सानिया मिर्जा आदि महिलाओं ने अपनी सफलता का परचम लहराया है। अनेकों सशक्त महिलाओं ने राजनीतिक गलियारों से लेकर कॉपोरेशन सैक्टर तक हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम किया है तथा सशक्त राश्ट्र की आधार बनी। अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के जरिए समाज में आगे बढती हुई प्रखर, प्रबल और प्रभावी ये महिलाएं समाज की सभी महिलाओं की सफलता का आधार बनती जा रही हैं। श्रीमती सोनिया गांधी, सुशमा स्वराज, ममता बनर्जी, शीला दीक्षित, लता मंगेशकर, किरण बेदी, निरूपमा राव, मीरा कुमार, श्रीमती प्रतिभा पाटिल, ऐश्वर्या राय, दीपिका पादूकोण, सावित्री जिंदल, चन्दा कोचर, अरूंधती भट्टाचार्य आदि सफल महिलाएं समाज की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन रही हैं। युवा, धनवान, सफल और प्रभावी यही तस्वीर है आज की भारतीय महिलाओं की। अब वो सिर्फ सहायिका नहीं रही हैं बल्कि अच्छी शिक्षा, सहज करियर, गलैमर और स्वतंत्र आमदनी के साथ जुड़ी सभी सुविधाएं रखने वाली नारी बन चुकी हैं। वे सारे अवरोध उनके द्वारा तोड़े जा चुके हैं जिनमें पहले वे असहज महसूस करती थीं। आज वह अपनी श्रेश्ठता सिद्ध कर चुकी हैं फिर चाहे सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र हो या राजनैतिक इनकी सफलता दूसरों के लिए प्रेरक हैं। आई0 टी0 और साफटवेयर कंपनियों में महिलाओं की मौजूदगी सबसे ज्यादा है। कंपनियों में सी0 ई0 ओ के पद पर महिलाओं का वर्चस्व बढ रहा है। बीते एक दशक में आई0 आई0 टी0 और आई0 आई0 एम0 में ज्यादा संख्या महिलाओं की रही है। मेडिकल, सांईस और टैक्नालॉजी में भी ये दमखम से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहीं हैं। यानि भविश्य में भारत को रचने की जिम्मेदारी महिलाएं बखूबी सम्भाल रही हैं। नए प्रतिमान गढ़ते हुए लक्ष्यों को साध रही हैं और जीत का पर्याय बन रही हैं। शक्तिपुंज की इसी आभा को दिखाने की कोशिश है आज की महिलाओं की।

fu'd'k%

सरकारों द्वारा महिला कल्याण के लिए बनाई गई अनेकों योजनाओं एवं कार्यक्रमों तथा राश्ट्रीय एवं अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर समय–समय पर आयोजित किए जाने वाले संगोश्ठियों एवं सम्मेलनों में महिला सशक्तिकरण संबधी विचारों से इस तथ्य को बल प्राप्त हुआ है कि यह वर्तमान समाज की आवश्यकता है किंतु मात्र लंबे चौड़े भाशणों और वाद विवादों तथा फाइलों में पड़ी योजनाओं मात्र से महिलाओं का उत्थान संभव नहीं है। इसके लिए समाज को महिला सशक्तिकरण रूपी पौधे को अपने प्रयासों रूपी जल से सींचना होगा तथा महिलाओं को खोई हुई प्रतिश्ठा एवं सम्मान पुनः लौटाना होगा। इन सबसे भी पहले नारी को अपने अस्तित्व, अपने स्व की पहचान बनानी होगी। जिस दिन यह सब हो जाएगा उसी दिन महिला सशक्तिकरण का लक्ष्य भी प्राप्त हो जाएगा।

lUnHk&lph

1 सचदेव, डी.आर., भारत में समाज कल्याण प्रशासन, किताब महल, इलाहाबाद, 1999, पृ.सं. 288

2 व्यास, गिरिजा, पचांयती राज और महिलाओं की भूमिका, जगदीश पीयुश (सं.), पचांयती राजः संकल्प और सम्भावना, राजीव गांधी कालेज, सुलतानपुर, 1994 पृ. सं. 54

3 बह्म, जीवन–धारा, युग निर्माण प्रकाशन, मथुरा, 2003, पृ.सं. 54

4 छिल्लर, मजुंलता, भारतीय नारी शोशण के बदलते आयाम, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, 2010, पृ.सं. 1

5 तिवारी, आर.पी. एवं शुक्ला, डी.पी., भारतीय नारी वर्तमान समस्याएं और भावी समाधान, ए.पी.एच. पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2002, पृ.सं. 15

6 कुमार, विपिन, वैश्वीकरण एवं महिला सशक्तिकरण विधिक आयाम, रेगल पब्लिकेशनस, 2009, नई दिल्ली, पृ0 सं0 193

7 सिंह, वी0 एन0 एवं सिंह, जनमजय, आधूनिकता एवं नारी सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2010, पृ0 सृं0 08

8 मीनाक्षी एवं सिंह, निशांत, महिला सशक्तिकरण का सच ओमेगा पब्लिकेशंस, 2009, नई दिल्ली, पृ0 सं0 1

9 यादव, विरेन्द्र सिंह, नई सहस्त्राब्दी का महिला सशक्तिकरण (अवधारणा, चिंतन एवंम सरोकार) भाग–1, ओमेगा पब्लिकेशंस, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2010, पृ0 सं0 XIV